B.A-I

Short Notes on Raga - Jaunpuri

- यह राग आसावरी थाट से उत्पन्न माना गया है।
- इसमें ग, ध और नि स्वर कोमल लगते हैं।
- आरोह में ग वर्ज्य है और अवरोह में सातों स्वर प्रयोग किये जाते हैं।
- इसलिये इसकी जाति षाडव - सम्पूर्ण है।
- इसमें ध्र और संवादी ग्र है।
- इसे दिन के दूसरे प्रहर में इसे गाते - बजाते हैं।
- कुछ विद्वानों की धारणा है कि जौनपुर के सल्तान हुसेन शर्की ने इस राग की रचना की थी, इसलिये इसे जौनपुरी राग कहा गया है।
- इसे आसावरी राग से बचाने के लिए रे म प, बार बार प्रयोग करते हैं।
- यह उत्तरांग वादी राग है, अत: इसकी चलन अधिकतर सप्तक के उत्तर भंग तथा तार सप्तक में होती है।
- न्यास के स्वर सा और प